डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

classmate
Date
Page

विषय - संस्कृत

बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)

तृतीय वर्ष (षष्ठ पत्र) व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

1.(क) पारिभाषिक शब्दावली

संस्कृत-व्याकरण के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों की सूची एवं व्याख्या इस प्रकार है -

① गुण - अदेङ् गुणः । 1|1|2
अर्थः - अत् एङ् च गुणसंज्ञः स्यात् ।
अ, ए और ओ को गुण कहते हैं।
यथा - पर + उपकारः = परोपकारः, धर्मोपदेशः, राजेन्द्रः।

② वृद्धि - वृद्धिरादैच् । 1|1|1
अर्थः - आदैच्च वृद्धि संज्ञः स्यात् ।
आ, ऐ और औ वृद्धि संज्ञक होते हैं।
उदा० - देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्, सदैव, अत्रैव ।

③ प्रगृह्य - ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् । 1|1|11
अर्थः - ईकारान्तं ऊकारान्तं एकारान्तं च द्विवचनान्तं प्रगृह्यसंज्ञं स्यात् ।
ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है।
उदा० - हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे + अमू ।
उपर्युक्त उदाहरणों में ईकार, ऊकार एवं एकार की प्रकृतसूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होने के कारण 'प्लुत प्रगृह्या अचि नित्यम्' सूत्र से प्रकृतिवद् भाव हो जाता है और 'इको यणचि' से प्राप्त यणादेश का निषेध होकर 'हरीएतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू' ये प्रकृतरूप ही रहते हैं।

classmate
Date
Page

(4) प्रकृति भाव - प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् । 6।1।125

अर्थः - प्लुताः प्रगृह्याश्च नित्यं प्रकृत्याः भवन्ति अचि परे । अर्थात् अच् परे होने पर प्लुत और प्रगृह्य प्रकृतिवत् रहते हैं, अर्थात् सन्धिकार्य नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, यदि प्लुत और प्रगृह्य संज्ञक वर्ण के पश्चात् कोई स्वरवर्ण आता है तो परस्पर सन्धिकार्य नहीं होता ।

यथा - आगच्छ कृष्ण ३ ! अत्र गौश्चरति ।
इस वाक्य में णकारोत्तरवर्ती अकार प्लुत है और उसके पश्चात् 'अत्र' का अकार आया है । अतः प्रकृत-सूत्र से सन्धिकार्य नहीं होता है। इसी

(5) पूर्वरूप - एङः पदान्तादति । 6।1।109

अर्थः - पदान्तादेङोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात् । यदि पदान्त 'ए' या 'ओ' के बाद ह्रस्व अकार हो तो पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है।

उदा० - हरेऽव , विष्णोऽव इन उदाहरणों में पदान्त ए और पदान्त ओ के पश्चात् ह्रस्व अकार होने से पूर्वरूप एकार और ओकार होकर हरे + अव = हरेव या हरेऽव , विष्णो + अव = विष्णोव या विष्णोऽव रूप बनता है।

Scanned with CamScanner